श्रीसन्त-समागम

जिस में

कबीर, गुरुनानक, नामदेव, रैदास, तिलोचन, धन्नादास, बेनीदास, कमाल, धर्मदास, सदन कसाई, गरीबदास, इत्यादि का मिलाप श्रीगुरुनानक जी की इतिहासों से संग्रह करके जगदेवदास (श्रीमान् महाराजा विजैचन्द बिलासपुर शिमला के सेवक) ने भक्त जनों के विनोदार्थ ललित छन्दों में रचा और छपवा कर प्रकाश किया।

स्वामी मोहिं न बिसारिये, एक तुम्हारी आस।
बार बार बिनती यही, उर में करहु प्रकास॥

काशी

चन्द्रप्रभा प्रेस में बाबू गौरीशङ्कर लाल मेनेजर के प्रबन्ध से जगदेव दास ने छपवा कर प्रकाश किया।

प्रथमबार ५००] सम्बत् १९६८ [मूल्य =)